Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

महादेवी वर्मा और उनके रेखा चित्र का महत्व

डॉ. बिक्कड ए. एस.
हिन्दी विभागाध्यक्ष
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य एवं
विज्ञान महाविद्यालय, जालना

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 फर्रुखाबाद उत्तरप्रदेश हुआ और 11 सितंबर 1987 को उनका निधन हुआ। उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण को महत्व और बढ़ावा दिया है। हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा के रुप में जाना जाता है। उनकी आरंभिक शिक्षा इंदौर और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। उनको कई पुरस्कार मिले है।

महादेवी ने अपने काव्य में जन सामान्य के दु:ख दर्द, पीडा, वेदना तथा यातनाओं को सुक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके करुणामय साहित्य पर गौतम बुद्ध के करुणा, अहिंसा और शांति का प्रभाव दिखाई देता है। गरीब और निर्धन व्यक्तियों के लिए वह व्याकुल हो जाती है। पशु-पक्षी-फूल-पत्तियों में उनकी लगन रहती थी। उनके हृदय में करुणा और संवेदना की विशालता एवं दिव्यता के इन्हें कुछ विद्वानों ने आधुनिक मीरा भी कहा है। परंतु कुछ विद्वान इस बात को नहीं मानते और कहते की 'मीरा मीरा' और 'महादेवी महादेवी' है। मीरा के बाद में महादेवी वर्मा का उँचे स्थान पानेवाली महादेवी एकमात्र कवयित्री है। महादेवी को गद्य लेखन के रुप में कम जाना जाता है। वह एक महान कवयित्री के साथ साथ महान लेखिका भी हैं। संस्कृत में कहा है कि गद्य कवियों की कसौटी है। मुझे गद्य लिखना अच्छा लगता है। उन्होंने लिखा गद्य साहित्य ही उनकी श्रेष्ठ उपलब्धि है।

उनकी कविता व्यक्तिवादी और गद्य में उनकी दृष्टि समाष्टि पर केंद्रित है। साहित्य मूलत: निर्माण व्यक्ति के लिए और समष्टि के लिए भी है। तथा उनका साहित्य

यथार्थवादी है। उन्होंने अनेक प्रसंगो को देखा, भोगा, जिया और संघर्ष किया इन स्मृतिचित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है।

पिता गोविंद प्रसाद और माता हेमरानी देवी की एक मात्र संतान महादेवी थी। माता पिता के कर्मनिष्ठ संस्कारो से पल्लवित महादेवी का बचपन इंदौर में बीता यही से उन्होंने काव्य लेखन आरंभ किया। 9 वर्ष की उम्र में ही उनका विवाह हुआ। लेकिन नारायण शर्माजी से जो विवाह हुआ वह संबंध बना नहीं रहा। सबसे पहले उनके मनपर पहला आघात हुआ जो वेदना बनकर कविता में उभरकर आया है उनकी वेदना समाज की ओर भी संकेत करती है।

इंदौर छोडने के बाद लेखिका प्रयाग में स्थिर हो जाती है। वहाँ उन्होंने निर्धन और गरीब परिवारों के बच्चों को पढ़ाना उनकी मदत करना उनका अपना पहले से ही काम था। उनके दु:ख दर्द से व्याकुल हो जाती थी। उनका यह भाव उनके समस्त साहित्यपर दिखाई देता है। रेखा चित्र में अधिक दिखाई देता है। समाज में महिलाओं प्रताड़ना, पिडा से उनको बुरा लगता था। इसके संबंध में अमृतराय लिखते है-

"महादेवीजी की कविता समाज की दुरवस्था, असहाय नारी की विषन्न स्थिति, व्यक्ति और समाज के परस्पर वैषम्य, दमित इच्छाओं और प्रचलित सामाजिक सूसंस्कारों के कारण पूर्ण रुप में प्रस्फुटित न होनेवाले जीवन का भावनात्मक, आत्मकेंद्रित निरुपण है, उनके निस्वार्थ, पराजित, प्रतिक्रया स्वरुप कवि का एकांत सदन है... ।"

महादेवी का साहित्य मुख्य समाज प्रिय है। उनके साहित्य का स्वर पीडित जनता का जीव है। उनकी अपनी पीडा नहीं रही मूल भावना समाज की रही। महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व उनके साहित्य में झलकता है। महादेवी वर्मा का चर्चित रेखाचित्र 'विधवा भाभी' एक मारवाडी समाज की नारी की समस्याओं का चित्रण किया है। उस नारी का जीवन ऐसा है कि उसे बाहर जाने की इजाजत नहीं रहती। उसे चार दीवारों में कैद रखा जाता है। कैदी की तरह जीवन जीनेवाली वह विधवा पुरुषों के जुल्म चुपचाप सहती है बाहर की दुनिया देखने की इच्छा होते भी नहीं देख सकती। अंदर से ही वह

लेखिका को देखती है। इसी तरह एक और नारी का चरित्र 'बिट्टो' जो बालविधवा है। अपने ही मायके में अपने भाईयों से छला जाता है। उसका विवाह एक 54 साल बूढे के साथ नौकरों की तरह करा देना। नारी का इतना हनन। यहाँ तक बात खत्म नहीं होती। आगे दो तीन साल बाद वह बूढ़ा गुजर जाता है और 'बिट्टो' फिर विधवा बन जाती है। सौतेला पुत्र उसे धन संपत्ति से वंचित रखता है। लेखिकाने समाज के साथ जो भी घटना घटती है उसका जिता जागता वर्णन रेखा चित्र में किया है।

'छलमा' एक पति-परित्यक्ता, विवश नारी का करुण चित्रण है। आज भी नारी को एक वस्तू के रुप में समाज मान्यता प्राप्त है। हाल-क्रुरता को लिखती है - "इस समय तो भारतीय पुरुष जैसे अपने मनोरंजन के लिए रंग-बिरंगे पक्षी पाल लेता है, उपयोग के लिए गाय या घोडा पाल लेता है, उसी प्रकार यह एक स्त्री को भी पालता है, हमारे समाज के पुरुष के विवेकहीन जीवन का सजीव चित्र देखना हो तो विवाह के समय, गुलाब सी खिली हुई स्वस्थ बालिका को पाँच वर्ष बाद देखिए, उस समय प्रौढ हुई दूर्बल संतानों की रोगिणी पीली माता में कौन-सी विवशता कौन-सी रुला देनेवाली करुणा न मिले।"[2]

लेखिका पर भारतीय संस्कृति का गाढा प्रभाव है। वह एक ओर पुरुष प्रधान संस्कृति से शोषित नारी का चित्रण करती है तो दुसरी ओर उसी पुरुष के प्रति उदार, एकनिष्ठ एवं सहनशील नारी का भी चित्रण करती है।

संदर्भ सूची :

1. अतित के चलचित्र, अपनी बात, पृष्ठ. 2
2. मेरे प्रिय संभाषण - महादेवी वर्मा, पृष्ठ 43